## पद २०५

(राग: पिलु - ताल: दीपचंदी)

दावा दावा गे सांवळीयासी। प्राण व्याकुळ दिन रजनीसी।।ध्रु.।। त्वरें येतों सांगुनी मज गेला। नेणों कवणासी पाहुनि भुलला।।१।। वेगें जाउनी समजावी सखये। कर जोडुनि धरित्यें पाय गे।।२।। जरी नयेचि घडीं यदुराणा। माणिक प्रभुविण त्यागिन प्राणा।।३।।